

2640. BHARTṚ. 1, 97 lith. Ausg. III (a. वरं st. करं. d. चेतः संप्रति चन्द्र°). ÇATAKÂV. 73 (d. चेतः संप्रति चन्द्र°).

2631. ÇATAKÂV. 33. b. वामामकामामपि.

2636. = KUMÂRAS. 1, 49.

2664. = KÂṆ. 84 bei WEBER (a. लाडनाद्. b. ताडनाद्. c. तस्माच्छिष्यं च पुत्रं च. d. लाडयेत्). VṚDDHA-KÂṆ. 2, 12 und PRASAṆGÂBH. 16, a (a. लालनाद् und लालनात्. b. ताडनाद् und ताडनात्).

2663. = KÂṆ. 83 bei WEBER (c. च st. तु). VṚDDHA-KÂṆ. 3, 18 (d. पुत्रे मित्र समाचरेत् eine Ausg.). Vgl. Spruch 3379.

2671. ÇATAKÂV. 13. b. Richtig व्यामोत्य. c. कुञ्जलिता°.

2673. Auch nach KÂṆ. NĪTIS. 8, 59 eingeschoben. a. ऽत्यन्त st. ऽसत्यः. c. योगाव-
मत्ता. d. सुखेच्छेद्यो रिपुः सदा.

2676. = VṚDDHA-KÂṆ. 6, 12. c. क्कंदानुवृत्त्या (d. i. °वृत्त्या) च. d. यथार्थत्वेन.

2679. = VṚDDHA-KÂṆ. 1, 10. d. संगतिम् st. संस्थितिम्.

2680. b. दुष्प्राप्या st. दुरापा Comm. zu KÂṆ. NĪTIS.

2686 (in der Note ist st. 2386 so zu lesen). = VṚDDHA-KÂṆ. 17, 4 (a. अगुणान् st. अगुणेन eine Ausg. c. सुमहिमा). PRASAṆGÂBH. 10, b (a. अगुणेन st. अगुणेन. c. सुमहिमा).

2687. Vgl. Spruch 4960.

2706. b. Vgl. M. 7, 218.

2716. = KÂṆ. 99 bei WEBER. d. क्षीणे st. कृशे.

2717. = KAVITÂMṚTA. 61.

2720. BHARTṚ. 2, 96 lith. Ausg. III. a. जने st. रणे.

2721. ÇATAKÂV. 102. b. समा ये ऽस्माकं वा स्मृतिविषयता. c. वयं संप्रत्येते प्रति°.

2722. BHARTṚ. 3, 55 lith. Ausg. III. c. दरिद्री. d. परितुष्टः; दरिद्री.

2727. = VṚDDHA-KÂṆ. 10, 12. a. वने — सेविते. b. द्रुमालये, सेवनम् st. भोजनम्. c. तृणेषु शय्या शतजीर्णवल्कलं.

2743. = KÂṆ. 23 bei WEBER (b. शतान्यपि neben शतैरपि. d. गणस्तथा neben गणै-
रपि). VṚDDHA-KÂṆ. 4, 6 (5). Hier lautet der Spruch: एको ऽपि गुणवान्पुत्रो निर्गुणैश्च
शतैरपि । एकश्चन्द्रस्तमो (auch तंमो) कृत्ति न च ताराः सहस्रशः ॥

2737. Vgl. Spruch 4677.

2762. = KÂṆ. 63 bei WEBER. a. वस्त्रहीनमलंकारं. d. वर्जयित्तान्विचक्षणः.

2764. Vgl. Spruch 3924 und 3296.

2763. = PRASAṆGÂBH. 4, a. b. कुहंगायते. c. माल्यगणायते. d. यस्मिन्वाखिललोका-
वल्लभवरं शीलं.